"माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक व दार्शनिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

सुषमा यादव, पीएच.डी. विद्वान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, शिक्षा विभाग, प्रोधौगिकी विश्वविधायलय, जयपुर, राजस्थान
डॉ. लवी सक्सैना, एसोसिएट प्रोफेसर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, शिक्षा विभाग, प्रोधौगिकी विश्वविधायलय, जयपुर, राजस्थान

संक्षेप

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक और दार्शनिक विचार भारतीय राष्ट्रवाद और शिक्षा के दृष्टिकोण को एक नया दिशा देने वाले थे। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के दूसरे सरसंघचालक के रूप में भारतीय समाज और शिक्षा व्यवस्था में गहरे बदलाव की आवश्यकता महसूस करते थे। उनका मानना था कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को पश्चिमी प्रभावों से मुक्त कर उसे भारतीय संस्कृति और परंपराओं के अनुरूप ढालना चाहिए। गोलवलकर का दृष्टिकोण शिक्षा को न केवल ज्ञान का स्रोत, बल्कि एक उपकरण माना था जो व्यक्तित्व निर्माण, नैतिकता और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है। उनके दार्शनिक विचारों में हिंदू राष्ट्रवाद और भारतीय सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण प्रमुख था। इस अध्ययन का उद्देश्य गोलवलकर के शैक्षिक और दार्शनिक विचारों का गहन विश्लेषण करना है, ताकि उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता और उनके विचारों का आधुनिक भारतीय संदर्भ में मूल्यांकन किया जा सके।

प्रस्तावना

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर भारतीय राष्ट्रवाद और शैक्षिक दर्शन के एक प्रमुख विचारक थे, जिनका प्रभाव भारतीय समाज और शिक्षा प्रणाली पर अत्यधिक गहरा पड़ा। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के दूसरे सरसंघचालक थे और उनके विचार भारतीय समाज, संस्कृति और शिक्षा के संबंध में अत्यधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। गोलवलकर का दृष्टिकोण भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ों और संरचना को समझने में एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य न केवल मानसिक विकास बल्कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद की भावना का संवर्धन करना भी होना चाहिए। वे पश्चिमी शिक्षा पद्धति की आलोचना करते हुए इसे भारतीय समाज के लिए अनुपयुक्त मानते थे और इसके स्थान पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा पद्धतियों को महत्व देते थे, जो व्यक्ति की आत्मा, संस्कृति और राष्ट्रीयता से जुड़ी होती हैं। गोलवलकर का दार्शनिक दृष्टिकोण भी समाज के सामूहिक और राष्ट्रीय हितों पर केंद्रित था, जिसमें उन्होंने समाज को एकजुट करने और भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए शिक्षा को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा। उनके विचारों का उद्देश्य भारतीय समाज को जागरूक करना और उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना था। उनके शिक्षा दर्शन में नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण और सांस्कृतिक जागरूकता को सर्वोपरि माना गया। इस अध्ययन का उद्देश्य गोलवलकर के शैक्षिक और दार्शनिक विचारों का विश्लेषण करना है ताकि उनके विचारों की गहराई और उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए दृष्टिकोण को आधुनिक भारतीय समाज में उनके प्रभाव और प्रासंगिकता के संदर्भ में समझा जा सके। इस शोध के माध्यम से हम गोलवलकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे और यह देखेंगे कि उनके दृष्टिकोण ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया।

अध्ययन का पृष्ठभूमि और महत्व

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर भारतीय समाज और शिक्षा के प्रमुख चिंतकों में से एक थे, जिन्होंने अपने विचारों और कार्यों से भारतीय शिक्षा और राष्ट्रवाद की दिशा को आकार दिया। उनका योगदान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के नेतृत्व में महत्वपूर्ण था, और उनके शैक्षिक और दार्शनिक दृष्टिकोण ने भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक पहचान और शिक्षा पद्धतियों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया। गोलवलकर का मानना था कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी प्रभावों को समाप्त कर, उसे भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के अनुरूप ढालना चाहिए। उनका दृष्टिकोण भारतीय समाज के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि यह शिक्षा को न केवल ज्ञान के प्रसार, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और राष्ट्रवादी जागरूकता के एक उपकरण के रूप में देखता है। इस अध्ययन का उद्देश्य गोलवलकर के विचारों का गहराई से विश्लेषण करना और उनकी प्रासंगिकता को आधुनिक भारतीय संदर्भ में समझना है।

गोलवलकर का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर गहरा और स्थायी प्रभाव रहा है, खासकर जब बात आती है भारतीय संस्कृति, धर्म और राष्ट्रीयता की शिक्षा को प्रोत्साहित करने की। गोलवलकर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल मानसिक विकास तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह चरित्र निर्माण, समाजिक जिम्मेदारी, और राष्ट्र के प्रति प्रेम को भी बढ़ावा देना चाहिए। उनके दृष्टिकोण में, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य एक ऐसे नागरिक का निर्माण करना था, जो न केवल अपने व्यक्तिगत विकास के लिए जिम्मेदार हो, बल्कि समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए भी अपनी भूमिका निभाए।

गोलवलकर का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव मुख्य रूप से इस बात में था कि उन्होंने भारतीय संस्कृति और पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। वे पश्चिमी शिक्षा पद्धतियों से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने यह महसूस किया कि इन पद्धतियों में भारतीय समाज और संस्कृति का सही ढंग से प्रतिनिधित्व नहीं किया गया था। गोलवलकर का मानना था कि यदि भारतीय शिक्षा प्रणाली को सशक्त बनाना है, तो इसे भारतीय धर्म, संस्कृति, और इतिहास के अनुरूप ढाला जाना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी जड़ों से जुड़ी रहें और उन्हें गर्व महसूस हो।

गोलवलकर ने पारंपरिक भारतीय शिक्षा पद्धतियों जैसे गुरुकुल प्रणाली की सराहना की, जिसमें केवल शारीरिक और मानसिक विकास ही नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा भी दी जाती थी। उनका यह विश्वास था कि केवल भौतिक ज्ञान से ही एक सशक्त समाज का निर्माण नहीं हो सकता, बल्कि उसमें संस्कारों और राष्ट्रीयता की भावना का समावेश भी जरूरी है।

गोलवलकर का भारतीय शिक्षा पर प्रभाव इस प्रकार से था कि उनके विचारों के कारण शिक्षा में राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक जागरूकता को प्राथमिकता दी जाने लगी। वे चाहते थे कि बच्चों को केवल किताबों का ज्ञान न दिया जाए, बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत, धर्म, और नैतिक मूल्यों से भी अवगत कराया जाए, ताकि वे एक जिम्मेदार और समाज के प्रति जागरूक नागरिक बन सकें। उनके दृष्टिकोण ने शिक्षा को केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की समृद्धि में योगदान देने का एक उपकरण बना दिया।

आज भी गोलवलकर के विचार भारतीय शिक्षा नीति में प्रभाव डालते हैं, खासकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में, जिसमें भारतीय संस्कृति और परंपराओं को शिक्षा में समाहित करने की बात की गई है। गोलवलकर का यह दृष्टिकोण आज के समय में भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह भारतीयता और राष्ट्रीयता के प्रति आस्थावान नागरिकों का निर्माण करता है, जो अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए समाज और राष्ट्र की सेवा में अपना योगदान देते हैं।

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शिक्षा के उद्देश्य

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद और नैतिकता से गहरे जुड़े हुए थे। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का अर्जन नहीं, बल्कि यह व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहिए। गोलवलकर के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य था समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को न केवल मानसिक और शारीरिक रूप से सशक्त बनाना, बल्कि उसे नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी तैयार करना। उन्होंने शिक्षा को जीवन की दिशा और उद्देश्य के रूप में देखा, जिसमें एक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों, जिम्मेदारियों और समाज के प्रति अपने दायित्वों का बोध कराया जाता है।

गोलवलकर के शिक्षा के उद्देश्यों में कुछ महत्वपूर्ण पहलू थे। सबसे पहले, वे चाहते थे कि शिक्षा को भारतीय संस्कृति और धर्म से जोड़ा जाए, ताकि युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ी रहे और उसे अपनी सांस्कृतिक पहचान पर गर्व महसूस हो। उनका मानना था कि यदि शिक्षा में भारतीयता की भावना होगी, तो छात्र न केवल अच्छा नागरिक बनेगा, बल्कि समाज के प्रति भी संवेदनशील रहेगा। दूसरी ओर, गोलवलकर का यह मानना था कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य समाज के कल्याण के लिए कार्य करना भी होना चाहिए। उनके अनुसार, शिक्षा का माध्यम एक व्यक्ति को सिर्फ अपने व्यक्तिगत जीवन में सफलता पाने का नहीं, बल्कि समाज के विकास और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का भी होना चाहिए। वे मानते थे कि एक सशक्त राष्ट्र तभी बन सकता है जब उसकी शिक्षा प्रणाली में एकजुटता, सामूहिकता और राष्ट्रीयता की भावना हो।

गोलवलकर का तीसरा उद्देश्य था चरित्र निर्माण। वे मानते थे कि केवल बौद्धिक शिक्षा से व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्ण नहीं हो सकता, बल्कि उसे अच्छे गुणों, नैतिकता और समाज में अपने कर्तव्यों का पालन करने की शिक्षा भी मिलनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने शिक्षा के पाठ्यक्रम में नैतिक और धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य किया, ताकि छात्र जीवन के सही मूल्यों को समझे और उनका पालन करें। गोलवलकर के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य था एक ऐसा व्यक्ति तैयार करना, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन में सफलता प्राप्त करे, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए अपना योगदान भी दे। इसके लिए उन्होंने भारतीय शिक्षा पद्धतियों को महत्व दिया और उनका समर्थन किया, जो समाज के हर वर्ग की मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति को सुनिश्चित करती थीं। अंत में, गोलवलकर का शिक्षा के उद्देश्यों पर जोर था कि यह एक प्रक्रिया हो, जिसमें समाज और राष्ट्र के लिए जागरूक, सशक्त और जिम्मेदार नागरिक तैयार हों। उनके विचार आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए प्रासंगिक हैं, क्योंकि हम शिक्षा को सिर्फ ज्ञान की दृष्टि से नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिकता और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं।

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर का जीवनवृत्त

- **प्रारंभिक जीवन और शिक्षा**

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर का जन्म 19 फरवरी 1906 को महाराष्ट्र के रामटेक में हुआ था। वे अपने माता-पिता की चौथी संतान थे। उनके पिता श्री सदाशिव राव उपाख्य 'भाऊ जी' एक सरकारी कर्मचारी थे, और उनकी माँ श्रीमती लक्ष्मीबाई उपाख्य 'ताई' एक सशक्त धार्मिक और सांस्कृतिक व्यक्ति थीं। बचपन से ही माधवराव में असाधारण बुद्धिमत्ता और ज्ञान की ललक दिखाई दी।

प्रारंभिक शिक्षा के दौरान उन्होंने अपनी तीव्र बुद्धि और अभिरुचि के कारण असाधारण स्मरण शक्ति और गहरी सोच विकसित की। अपनी प्रारंभिक शिक्षा में ही वे कुशाग्र बुद्धि वाले छात्र माने गए और उनकी शिक्षा का मार्गदर्शन उनके पिता ने किया। माधवराव ने अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद, 1924 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। वहां उन्होंने प्राणिविज्ञान में बी.एससी. (1926) और एम.एससी. (1928) की डिग्रियां प्रथम श्रेणी में प्राप्त कीं।

- **गुरु और दर्शन का गोलवलकर पर प्रभाव**

माधवराव गोलवलकर का जीवन उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित था। वे हमेशा भारतीय संस्कृति, वेदों और पुरानी परंपराओं के प्रति आस्थावान रहे। बचपन से ही वे धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में रुचि रखते थे, और विश्वविद्यालय के दौरान उनके विचारों में आध्यात्मिकता और राष्ट्रीयता का संगम स्पष्ट रूप से दिखने लगा। गोलवलकर ने भारतीय संस्कृति के महत्व को समझा और यह महसूस किया कि भारत को अपने सांस्कृतिक धरोहर को फिर से जागृत करना होगा। उनका मानना था कि भारतीयता को मजबूत करने के लिए हिंदू धर्म और संस्कृति को सर्वोपरि माना जाना चाहिए। उनके द्वारा किए गए विचारों का प्रभाव उनके अनुयायियों और पूरे देश पर पड़ा। वे जीवन के हर क्षेत्र में भारतीय मूल्यों के प्रचारक बने और एक मजबूत राष्ट्र की आवश्यकता महसूस की।

- **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) में योगदान**

गोलवलकर का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के प्रति योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण था। वे संघ के द्वितीय सरसंघचालक थे और उनकी नेतृत्व में संघ ने राष्ट्रीय एकता, सुरक्षा और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। 1940 में डॉ. हेडगेवार के निधन के बाद, गोलवलकर ने संघ को एक संगठित और उद्देश्यपूर्ण दिशा दी। उनके नेतृत्व में संघ ने कई समाजिक और राष्ट्रीय कार्यों को प्राथमिकता दी और भारतीय जनता को एकजुट करने के लिए मेहनत की। वे संघ के कार्यकर्ताओं को न केवल शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाने के लिए प्रेरित करते थे, बल्कि उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को भी मजबूती से स्थापित किया। गोलवलकर ने संघ के संविधान और कार्यशैली को व्यवस्थित किया, जिससे यह संस्था आज एक विश्वसनीय और सम्मानित संगठन बन चुकी है।

- **प्रमुख कृतियाँ और प्रकाशन**

गोलवलकर ने कई महत्वपूर्ण कृतियाँ लिखीं, जिनमें *बंच ऑफ थॉट्स* और *We, or Our Nationhood Defined* शामिल हैं। *बंच ऑफ थॉट्स* को हिंदी में *विचार नवनीत* के नाम से अनुवादित किया गया है। इन पुस्तकों में उन्होंने भारतीय समाज, संस्कृति और राष्ट्रवाद के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। उनका मानना था कि भारतीयता की पहचान हिंदू धर्म और संस्कृति में निहित है। उनके विचारों ने समाज में जागरूकता फैलाई और कई लोगों को प्रेरित किया। इसके अलावा, *गुरूजी: दृष्टि एवं लक्ष्य* पुस्तक में उनके जीवन और कार्यों का विश्लेषण किया गया है। उनकी कृतियाँ आज भी भारतीय राजनीति और समाज में गहरे प्रभाव डालती हैं। गोलवलकर का जीवन, उनके विचार और उनके योगदान भारतीय समाज के निर्माण में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहे हैं। वे एक महान विचारक, शिक्षक और राष्ट्रवादी थे जिन्होंने भारतीय संस्कृति, समाज और राष्ट्रीयता को अपनी शिक्षा और कार्यों से प्रगति की दिशा दी।

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक दर्शन

- **गोलवलकर के शैक्षिक दर्शन के प्रमुख सिद्धांत**

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर का शैक्षिक दर्शन भारतीय संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्रीयता के सिद्धांतों पर आधारित था। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य न केवल ज्ञान प्राप्ति है, बल्कि यह व्यक्तित्व विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व और देशभक्ति की भावना को भी बढ़ावा देना चाहिए। गोलवलकर ने शिक्षा को जीवन के व्यापक दृष्टिकोण से देखा और इसे एक ऐसे साधन के रूप में प्रस्तुत किया, जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और नैतिक रूप से सशक्त बनाए। उनके शैक्षिक सिद्धांतों में, विशेष रूप से चरित्र निर्माण, संस्कार, और समाज में सामूहिकता का प्रचलन प्रमुख था। वे यह मानते थे कि शिक्षा को समाज के सर्वांगीण विकास के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

- **शिक्षा और राष्ट्रीयता**

गोलवलकर का मानना था कि शिक्षा और राष्ट्रीयता के बीच गहरा संबंध है। उन्होंने भारतीयता को अपने शैक्षिक दृष्टिकोण का केंद्रीय तत्व माना। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र के प्रति प्रेम और भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था को बढ़ाना था। गोलवलकर के अनुसार, शिक्षा की सही दिशा तभी मिल सकती है जब हम उसे भारतीय सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीयता के अनुरूप ढालें। उनके विचार में, केवल व्यक्ति की शिक्षा नहीं, बल्कि राष्ट्र की शिक्षा का उद्देश्य भी राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय सुरक्षा और संस्कृति के संरक्षण के लिए होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि यदि शिक्षा में भारतीयता की भावना नहीं है, तो यह समाज और राष्ट्र के लिए खतरनाक हो सकता है।

- **पारंपरिक भारतीय शिक्षा पद्धतियों की भूमिका**

गोलवलकर के शैक्षिक दर्शन में पारंपरिक भारतीय शिक्षा पद्धतियों का विशेष स्थान था। वे मानते थे कि भारत की पुरानी शिक्षा पद्धतियाँ, जैसे गुरुकुल प्रणाली, व्यक्ति को केवल मानसिक ज्ञान नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन भी प्रदान करती थीं। उन्होंने भारतीय गुरुकुल प्रणाली को आदर्श माना, जिसमें नैतिक और धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तिगत कर्तव्यों और समाजिक जिम्मेदारियों को भी सिखाया जाता था। वे मानते थे कि भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए कार्य करना था।

- **पश्चिमी शिक्षा की आलोचना और उसका भारत पर प्रभाव**

गोलवलकर ने पश्चिमी शिक्षा पद्धतियों की आलोचना की थी, क्योंकि उन्होंने भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता से संबंधित विषयों को नकारा। उनका मानना था कि पश्चिमी शिक्षा व्यक्ति को भौतिकवादी दृष्टिकोण से देखा करती है, जिसमें धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की कोई अहमियत नहीं होती। वे यह मानते थे कि पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से भारतीय समाज में आत्मनिर्भरता और नैतिक मूल्यों की कमी हो रही है। उनके अनुसार, यह शिक्षा केवल भौतिकता और व्यक्तिगत सफलता पर जोर देती है, जबकि भारतीय शिक्षा का उद्देश्य समाज और राष्ट्र की भलाई के लिए कार्य करना है।

- **गोलवलकर के शैक्षिक विचारों का आधुनिक संदर्भ में अनुप्रयोग**

गोलवलकर के शैक्षिक विचार आज के समय में भी प्रासंगिक हैं, जब भारतीय शिक्षा प्रणाली पश्चिमी प्रभावों से प्रभावित हो रही है। वे चाहते थे कि शिक्षा में भारतीय संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्रीयता को मजबूत किया जाए, ताकि विद्यार्थी केवल व्यक्तिगत सफलता की ओर न बढ़ें, बल्कि समाज और राष्ट्र की सेवा में भी अपना योगदान दें। उनका दृष्टिकोण आज के भारतीय शिक्षा मॉडल में यह सिखाता है कि हमें एक ऐसे संतुलित और समग्र शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है, जो न केवल भौतिक विकास, बल्कि मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास को भी प्रोत्साहित करे। उनके विचार यह भी बताते हैं कि शिक्षा को एक दिशा और उद्देश्य की आवश्यकता है, जो समाज में नैतिकता, सहयोग और राष्ट्र की एकता को बढ़ावा दे। गोलवलकर का शैक्षिक दर्शन भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण विचारधारा प्रस्तुत करता है, जो न केवल ज्ञान की प्राप्ति, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए जिम्मेदारी का अहसास भी कराता है।

गोलवलकर के दार्शनिक विचार

- **गोलवलकर का दृष्टिकोण और भारतीय दर्शन**

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के दार्शनिक विचार भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद और हिंदू धर्म की जड़ों से गहरे जुड़े हुए थे। वे मानते थे कि भारतीय दर्शन और संस्कृति में निहित सर्वोत्तम मूल्य ही समाज को शांति, एकता और समृद्धि प्रदान कर सकते हैं। उनका दर्शन इस सिद्धांत पर आधारित था कि भारतीयता को पुनर्जीवित करना और उसे कायम रखना ही राष्ट्र की शक्ति का स्रोत है। गोलवलकर का यह मानना था कि हिंदू धर्म का उद्देश्य न केवल व्यक्ति का आध्यात्मिक उन्नयन है, बल्कि यह समाज के हर वर्ग के लिए नैतिक और सामाजिक दिशा प्रदान करता है। वे भारतीय दर्शन को एक समग्र और सर्वांगीण दृष्टिकोण मानते थे, जो न केवल भौतिक जीवन, बल्कि आत्मा और मानसिकता को भी संबोधित करता है।

- **राष्ट्रीयता और हिंदू राष्ट्रवाद**

गोलवलकर के दार्शनिक विचारों में राष्ट्रीयता का अत्यधिक महत्व था, और उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को हिंदू राष्ट्रवाद के रूप में परिभाषित किया। उनका मानना था कि भारत एक हिंदू राष्ट्र है, और इसका निर्माण और संप्रभुता हिंदू धर्म, संस्कृति और परंपराओं पर आधारित होनी चाहिए। गोलवलकर के अनुसार, भारतीय राष्ट्रवाद की ताकत उसकी सांस्कृतिक विविधता और उसकी आध्यात्मिक परंपराओं में निहित है, और इसे पश्चिमी दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। उनका यह विचार था कि हिंदू धर्म और संस्कृति भारतीय समाज की नींव हैं, और राष्ट्रीयता तभी स्थिर और मजबूत हो सकती है जब यह संस्कृति और धर्म से जुड़े मूल्यों को महत्व दिया जाए। वे यह मानते थे कि भारतीय समाज को एकजुट करने और शक्ति देने के लिए धर्म का मार्गदर्शन आवश्यक है।

- **समाज और संस्कृति पर गोलवलकर के विचार**

गोलवलकर के दार्शनिक विचारों में समाज और संस्कृति का गहरा संबंध था। उनका मानना था कि समाज को प्रगति की दिशा में ले जाने के लिए उसे अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ा रहना चाहिए। वे समाज में हर व्यक्ति के धर्म, संस्कार और सामाजिक जिम्मेदारियों को महत्वपूर्ण मानते थे। गोलवलकर के अनुसार, यदि समाज की नैतिक और सांस्कृतिक नींव मजबूत है, तो वह सामाजिक और राजनीतिक संकटों का सामना करने में सक्षम होता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को दुनिया की अन्य संस्कृतियों से अलग एक अद्वितीय और सशक्त तत्व माना, जो समाज को एकजुट करने और उसे नैतिक दिशा देने में सहायक है।

- **गोलवलकर का मानवतावाद और विश्व दृष्टिकोण**

गोलवलकर के दार्शनिक दृष्टिकोण में मानवता और विश्व दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। उन्होंने यह माना कि समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए शिक्षा, समाजसेवा और धर्म का पालन करना आवश्यक है। उनका यह मानना था कि किसी भी धर्म या संस्कृति में निहित उच्च मानवीय मूल्यों को अपनाकर हम वैश्विक दृष्टिकोण से दुनिया को एक बेहतर स्थान बना सकते हैं। उनका उद्देश्य केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं था, बल्कि वे समस्त मानवता के लिए एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना की दिशा में कार्यरत थे।

- **गोलवलकर के विचारों का समकालीन संदर्भ में महत्व**

गोलवलकर के दार्शनिक विचार आज के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत भारतीयता, राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक मूल्यों के सिद्धांत आज भी समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं और विवादों का समाधान प्रदान कर सकते हैं। उनके विचार यह बताते हैं कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति और एकता तभी संभव है, जब वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहे और अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखे। गोलवलकर का यह दार्शनिक दृष्टिकोण हमें अपने देश और समाज की नींव को मजबूत करने की दिशा में प्रेरित करता है, ताकि हम दुनिया के साथ संतुलित और सशक्त तरीके से संवाद कर सकें।

गोलवलकर के दार्शनिक विचार आज भी भारतीय समाज और राजनीति पर गहरा प्रभाव डालते हैं, और उनके विचारों से हमें

राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समृद्धि और समाजिक जिम्मेदारी की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

गोलवलकर के शैक्षिक और दार्शनिक विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता

- **शैक्षिक विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता**

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक और दार्शनिक विचारों की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता अत्यधिक महत्वपूर्ण है, खासकर जब हम भारतीय शिक्षा प्रणाली और समाज के वर्तमान परिवर्तनों की बात करते हैं। गोलवलकर का शैक्षिक दृष्टिकोण न केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित था, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण, समाज के प्रति जिम्मेदारी और राष्ट्र के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने के लिए था। उनका यह विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए कार्य करना है। आज के दौर में, जहां पश्चिमी शिक्षा पद्धतियाँ भारतीय शिक्षा प्रणाली में अधिक प्रभावी हो गई हैं, गोलवलकर का यह दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमें अपनी पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों, जैसे गुरुकुल प्रणाली, को पुनः स्थापित करना चाहिए। यह प्रणाली केवल शारीरिक और मानसिक विकास नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक विकास को भी प्राथमिकता देती थी। गोलवलकर ने यह महसूस किया था कि शिक्षा को भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता से जोड़कर एक ऐसा नागरिक तैयार किया जा सकता है, जो न केवल अपने व्यक्तिगत हितों के बारे में सोचे, बल्कि समाज और राष्ट्र की भलाई के लिए भी कार्य करे। उनके शैक्षिक विचारों का आधुनिक संदर्भ में सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रूप में देखा, जो समाज में एकता, सहयोग और राष्ट्रवाद की भावना को प्रबल करता है।

- **दार्शनिक विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता**

गोलवलकर के दार्शनिक विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता भी आज के समय में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, खासकर जब हम भारतीय राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक पहचान की बात करते हैं। गोलवलकर का यह दृष्टिकोण था कि भारत एक हिंदू राष्ट्र है, और इसे अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक जड़ों से जुड़ा रहना चाहिए। आज के वैश्वीकरण और पश्चिमी प्रभावों के दौर में, गोलवलकर के विचार भारतीय समाज को अपनी पहचान और संस्कृति को बनाए रखने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका मानना था कि भारतीय समाज की ताकत उसकी सांस्कृतिक विविधता में है, और इस विविधता को संरक्षित करने के लिए एक मजबूत राष्ट्रीयता की आवश्यकता है। उनका यह दृष्टिकोण, जो भारतीयता के संरक्षण और प्रोत्साहन पर आधारित था, आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि भारतीय समाज अब भी पश्चिमी प्रभावों से प्रभावित हो रहा है, और इसे अपनी सांस्कृतिक जड़ों को फिर से खोजने की आवश्यकता है। गोलवलकर के दार्शनिक विचार आज के संदर्भ में यह संदेश देते हैं कि एक राष्ट्र को अपने इतिहास, संस्कृति और परंपराओं के प्रति आस्थावान रहने की आवश्यकता है, ताकि वह किसी भी बाहरी दबाव से मुक्त और आत्मनिर्भर बन सके।

- **समाज में सामूहिकता और राष्ट्रीय एकता का संवर्धन**

गोलवलकर के विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू समाज में सामूहिकता और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है। उन्होंने यह मानते हुए कहा था कि शिक्षा और दर्शन का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि समाज की एकता और देश की समृद्धि के लिए कार्य करना चाहिए। उनके विचारों के अनुसार, यदि समाज को मजबूत बनाना है, तो उसे एकजुट रखना अत्यंत आवश्यक है। उनके विचारों का आधुनिक संदर्भ में अनुप्रयोग इस प्रकार से हो सकता है कि आज भी हमें अपने समाज में समानता और एकता की भावना को प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि समाज के हर वर्ग के लोग एकजुट होकर देश की प्रगति में योगदान कर सकें।

गोलवलकर के शैक्षिक और दार्शनिक विचार न केवल उनके समय में प्रासंगिक थे, बल्कि आज भी वे भारतीय समाज, शिक्षा और राजनीति में अत्यधिक प्रभावी हैं। उनके विचारों से हमें यह सिखने को मिलता है कि शिक्षा और दर्शन को समाज के और राष्ट्र के भले के लिए, ना केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए, प्रयोग करना चाहिए। उनके विचारों में यह प्रेरणा भी है कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता को आगे बढ़ाने के लिए हमें अपने विचारों और कार्यों को साकारात्मक दिशा में रखकर, सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देना चाहिए।

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के विचारों पर आधारित विद्याभारती की शैक्षिक व्यवस्था

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के विचारों ने भारतीय शिक्षा के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और इन विचारों का प्रभाव विद्याभारती की शैक्षिक व्यवस्थाओं पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विद्याभारती, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) से संबंधित एक शैक्षिक संगठन है, गोलवलकर के शिक्षा के उद्देश्य और दृष्टिकोण को अपनी शैक्षिक नीतियों में शामिल करता है। गोलवलकर का यह विश्वास था कि शिक्षा केवल ज्ञान का प्रसार नहीं, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्र के प्रति जागरूकता का भी संवर्धन करती है। विद्याभारती की शैक्षिक व्यवस्थाएँ इन विचारों के आधार पर विकसित की गईं, जो छात्रों को अपने मूल्यों और संस्कृति के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने के उद्देश्य से बनाई गई थीं।

1. भारतीयता और संस्कृति का समावेश

गोलवलकर के शिक्षा के दृष्टिकोण में भारतीय संस्कृति और धर्म को प्राथमिकता दी गई थी। विद्याभारती की शैक्षिक व्यवस्थाओं में भारतीय इतिहास, संस्कृति, और धार्मिक मूल्यों को विशेष स्थान दिया गया है। यहां के पाठ्यक्रम में भारतीय महापुरुषों, संस्कृति, संस्कृत, वेद, उपनिषद और भगवद गीता जैसी महत्वपूर्ण ग्रंथों का अध्ययन कराया जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों

को अपनी जड़ों से जोड़े रखना और उन्हें भारतीय परंपराओं के प्रति सम्मान और आस्था विकसित करना था। विद्याभारती के स्कूलों में छात्रों को केवल शैक्षिक ज्ञान नहीं, बल्कि भारतीयता और राष्ट्रवाद के महत्व को भी समझाया जाता है।

2. चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा

गोलवलकर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक उन्नति नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण भी होना चाहिए। विद्याभारती की शैक्षिक नीतियों में यह बारीकी से शामिल किया गया है। यहां छात्रों को अच्छे नागरिक बनने के लिए नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती है। यहां की पाठ्यशाला में अनुशासन, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, और सामाजिक जिम्मेदारी जैसी विशेषताओं को महत्व दिया जाता है। छात्रों को यह सिखाया जाता है कि वे अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ समाज और राष्ट्र की भलाई के लिए भी कार्य करें।

3. शारीरिक और मानसिक सशक्तिकरण

गोलवलकर का यह विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक और मानसिक सशक्तिकरण भी होना चाहिए। विद्याभारती की शैक्षिक व्यवस्था में खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों का महत्व है, ताकि छात्र शारीरिक रूप से मजबूत और मानसिक रूप से सशक्त बनें। यहां छात्रों को न केवल बौद्धिक विकास के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, बल्कि उन्हें शारीरिक और मानसिक विकास के लिए भी उचित अवसर दिए जाते हैं। योग, ध्यान, और शारीरिक प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बनाया गया है, जिससे छात्रों की मानसिक स्थिरता और शारीरिक दक्षता में सुधार हो।

4. समाजिकता और राष्ट्रवाद का संवर्धन

गोलवलकर ने हमेशा समाजिक एकता और राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। विद्याभारती की शैक्षिक व्यवस्था में छात्रों को एकजुटता और सामाजिक समरसता के महत्व को समझाया जाता है। यहां छात्रों को यह सिखाया जाता है कि वे केवल व्यक्तिगत सफलता के बारे में न सोचें, बल्कि समाज के कल्याण और राष्ट्र के हित के लिए भी काम करें। संघ के उद्देश्यों और गोलवलकर के विचारों के तहत छात्रों को एकजुट राष्ट्र के रूप में कार्य करने की प्रेरणा दी जाती है, जहां वे अपने राष्ट्र की सेवा में संकल्पित होते हैं।

5. आत्मनिर्भरता और सृजनात्मकता

गोलवलकर का मानना था कि शिक्षा को आत्मनिर्भर और सृजनात्मक बनाना चाहिए, ताकि छात्र केवल नौकरी के लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए भी अपने कर्तव्यों का पालन करें। विद्याभारती के स्कूलों में इस दिशा में प्रयास किए जाते हैं, जहां छात्रों को न केवल शिक्षा दी जाती है, बल्कि उन्हें कौशल विकास, उद्यमिता और स्व-निर्भरता की दिशा में भी प्रोत्साहित किया जाता है। छात्रों को तकनीकी शिक्षा, कारीगरी और व्यावसायिक कौशल की शिक्षा दी जाती है ताकि वे समाज में एक सक्षम और आत्मनिर्भर नागरिक के रूप में योगदान दे सकें।

विभिन्न शैक्षिक पहलुओं में गोलवलकर के विचारों का प्रभाव विद्याभारती की शैक्षिक व्यवस्थाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यहां की शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि यह छात्रों को भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों, राष्ट्रवाद और समाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करती है। गोलवलकर के दृष्टिकोण के तहत शिक्षा को एक व्यापक और समग्र प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो छात्रों को केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और नैतिक रूप से भी सशक्त बनाती है।

निष्कर्ष

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक और दार्शनिक विचार भारतीय समाज और शिक्षा व्यवस्था में गहरे और स्थायी प्रभाव छोड़ने वाले थे। उनका दृष्टिकोण न केवल शैक्षिक उद्देश्यों को समर्पित था, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने के लिए भी था। गोलवलकर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का अर्जन नहीं, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी और आस्था का निर्माण करना चाहिए। उनके शैक्षिक दृष्टिकोण में चरित्र निर्माण, संस्कृति के प्रति सम्मान और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे भारतीयता को शिक्षा का केंद्रीय तत्व मानते थे और चाहते थे कि शिक्षा में भारतीय संस्कृति, धर्म और नैतिक मूल्यों को प्रमुखता दी जाए। उनके दार्शनिक विचारों में भारतीय राष्ट्रवाद की विशेष प्रमुखता थी। गोलवलकर के अनुसार, भारत को एक हिंदू राष्ट्र के रूप में देखना चाहिए, जिसमें हिंदू धर्म और संस्कृति की भूमिका केंद्रीय हो। उनका विश्वास था कि समाज में एकता, सहयोग और राष्ट्रवाद की भावना का संवर्धन तभी संभव है, जब हम अपनी जड़ों से जुड़े रहें और भारतीय संस्कृति का सम्मान करें। गोलवलकर के विचारों ने भारतीय समाज को अपने राष्ट्र, संस्कृति और धर्म के प्रति गर्व और जिम्मेदारी की भावना सिखाई। आज के संदर्भ में भी गोलवलकर के विचारों का महत्व बना हुआ है। उनकी शिक्षा के उद्देश्य और दार्शनिक दृष्टिकोण आज के समाज में एकजुटता, सामाजिक जिम्मेदारी और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। उनके विचार भारतीय शिक्षा और समाज को सशक्त बनाने के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ

- सिंह, डी. आर. के. (2023)। एम.एस. गोलवलकर का शैक्षिक विचार: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और चरित्र विकास का एक अध्ययन। शैक्षिक प्रशासन: सिद्धांत और व्यवहार, 30(5), 10042-10049।
- वर्गीस, ए. (2020). सावरकर, हेडगवार और गोलवलकर की विचारधाराएँ: एक नागरिक का दृष्टिकोण। इंडियन जर्नल ऑफ़ थियोलॉजी, 62(1), 77-96.

- टम्टा, एस. (2021). माधव सदाशिवराव गोलवलकर और सामाजिक सद्भाव पर उनके विचार। जर्नल ऑफ कंटेम्पररी इश्यूज़ इन बिज़नेस एंड गवर्नमेंट, 27(3)।
- रे, पी. के., और सेठी, पी. (2022)। माधव सदाशिव गोलवलकर। आधुनिक भारतीय विचार का पुनर्मूल्यांकन: विषय और विचारक (पृष्ठ 251-276)। सिंगापुर: स्प्रिंगर नेचर सिंगापुर।
- श्री गरुजी रेखा चित्र दर्शन – लेखक: अजय मूलचन्द, वर्ष: 2006
- गीता दर्शन अपभ्रंशल खण्ड – लेखक: आचार्य रजनीश, वर्ष: 1980, प्रकाशन स्थल: दिल्ली
- श्री गुरुजी जीवन प्रसंग भाग-2 – प्रकाशक: लोमहर्षित प्रकाशन, स्थान: लखनऊ, दिनांक: 1 जनवरी 2004
- श्री गुरुजी व्यक्तित्व एवं कृतित्व – प्रकाशक: सुलोभ प्रकाशन, दिनांक: 21 मार्च 2004, लेखक: कृष्णकुमार
- एकात्म मानव दर्शन अन्य सहयोग – प्रकाशन तिथि: 1 जनवरी 2014, स्थान: दलोपुर, टोंडी
- श्री गुरुजी समग्र खण्ड-3 – प्रकाशक: सुलोभ प्रकाशन, दिनांक: 1 जनवरी 2017, दिल्ली, स्मारक समिति